अथ मधुरअलीकृत युगुलहिंडोललीला।

॥ रा॰ देवगिरी मलार ॥ आजु नवल दोउ झूलन आये जनक लली रघुबर छबि छाये लषन कमलकर छत्र सुहाये ॥ दामिनि दमकि गगन घन धाये गरजत रिमि झिमि जल बरसाये ॥ बोलत मोर मोद उपजाये कोकिल अति प्रिय बोल सुनाये ॥ भूषन बसन बिचित्र बनाये अरुण पुसाक सुभग मनभाये ॥ भौंह बंक जनु चाप चढ़ाये ॥ साजि मनों दृग बान चलाये ॥ आसपास बहु जंत्र जमाये राग मलार अलीगन गाये ॥ सुनि सुनि पिय प्यारी मुसक्याये मधुरअली लखिकै सुख पाये ॥ १ ॥ रा॰ गौड़गिरी मलार ॥ झूलत रघुबर ललित हिँ-डोरे ॥ सियासहित चितवन चित चोरे छबि-समूह सुषमानिधि बोरे ॥ दामिनि दमकि घटा घन घोरे परत बूंद जल पवनझकोरे ॥ बोलि मोर

पिकसहित चकोरे झनन झनन झींगुर कीर सो-
रे ॥ मणिमै भूषन मोल न थोरे पहिरे बसन
बिचित्र पटोरे ॥ लखि रति काम सकुचि मद
मोरे हैं मनहरन श्याम सखि गोरे ॥ करहिँ गान
अलि जंत्रन जोरे ताथेइ तानन तानन तोरे ॥
अंजनसहित लाल दृग डोरे मधुरअली लखि
तन मन भोरे ॥ २ ॥ रा० नटमलारी ॥ दोउ
झूलत रंगहिँडोरे ॥ दशरथ सुत अरु जनकनंदिनी
चितवनिमें चित चोरे ॥ मणिमै सब भूषण भूषित
अंग लसै तेहिपै पट पीत सुरंग छके छबिसों भरि
मोद उमंग हँसैं रससागर बोरे ॥ दै दै कर ताल
लली अरु लाल गवावहिँ बाल करैं रसख्याल म-
च्यो अति आनँद बेष विशाल कहै कवि को मति
थोरे ॥ बरसै रस सावन सावन कुंज सुहावन
फूले फूल सो पुंज तहा बहु मंजुअली अलि
गुंज करैं सरजू सुखसोरे ॥ ३ ॥ रा० नटमलारी ॥

दोउ झूलत मोद बढ़ावैं ॥ राम कुँवर मिथिलेश-कुमारी नेह भरे मुसक्यावैं ॥ गरजैं घन जोर नचैं बहु मोर दिपै बक पांतिहिँ ठौर तहां सरजू सोइ लेत हिलोर महा सुख को कबि गावैं ॥ लसैं अँग भूषण लाल दुकूल, छटा छबि छूटत जासु अतूल गरे गजरा गुहि शोभित फूल फुहारन सखि बरसावैं ॥ धधकैं घनसों मिरदंग महा मिलि मंजुअली बहु जंत्र जहां सरसैं रस सावनकुंज तहां रति कोटिन काम लजावैं ॥ ४ ॥ रा० नटमलारी ॥ झूलत रघुबर सिय प्यारी ॥ अति मनहरन सुभग सुषमानिधि छबिसमूह सुखकारी ॥ सरजू तट सावन कुंज बिशाल सुहावन शोभित वृक्ष तमाल लसैं चहुँवोर तहां मृदु बाल झुलावत दंपति वारी ॥ धधकैं मिरदंग मच्यो बहुरंग बजैं जामि जंत्र भले तेहि संग सितार सरोद मुचंग उपंग सुनौं दोउ दै कर तारी ॥ करैं

आलि गान मलार मिलाय बड़े स्वरते मुसक्याय छकाय कहै कबि मंजुअली सो लजाय छटा छबिकी बलिहारी ॥ ५ ॥ रा० नटमलारी ॥ रस-माते झूलन झूलैं ॥ दोउ श्रीसरजूकी कूलैं ॥ दशरथसुत अरु जनकनंदनी तिनसम नहिँ कोउ तूलैं ॥ मणिम जड़ित विभूषन सुंदर तापर अरुण दुकूलै॥मधुरअली अलि पास झुलावैं लखि सुंद-पति सुखमूले ॥ ६ ॥ रा० नटमलारी ॥ हिँडोरे लली लाल झूलैं ॥ दोउ हैं सुखके मूलैं॥ जलद-समान सुखधाम अभिराम राम कोटिकाम जापै नेउछावरि सहित वाम दामिनीसी सीय प्यारी सँग सुकुमारी भारी इन छबि को तूलैं ॥ भूषन जड़ित मनि बसन अरुन रँग लसत सुदेस बेस अंगन अजब क्या हंसनि बोलनि तीर त-कनि बकैती बीर अलियन हिय हूलैं ॥ गरजि गराजि घन बरसि फुहरि बूंद चपला चमाकि देखि

सकत नयन मूंद लखि मुखचंदयुग गाय गायकै मलार मंजुआलि सुधि भूलैं ॥ ७ ॥ रा० नट-मलारी ॥ हिंडोरे झूलत लाल लली ॥ छबि क्या अजब भली ॥ सावन सुखद मनभावन है येरी वीर बन प्रमोद कुंजाबिच राजैं सरजूके तीर रतनरचित आति झूला है अतूला वेस सुंदर सुभग थली ॥ ऐसी घनछांही सुखमाही गलबांही दीन्हे पिये प्यारी दोउ रति कामहूकी छबि छीने आस पास सखिगन गावैं मलार मेघ कोउ अलि नाचि चली ॥ मेघ घहरात सुनि मोर कहरात तैसे पवनके जोर फहरात पट अंगनके देखि देखि दंपतिको वदन मयंक मांनो बलिहारी मधुरअली ॥ ८ ॥ रा० नटमलारी ॥ नवल दोउ झमकि झूलि गावैं ॥ सखि आंनँद उपजावैं ॥ अवध-किशोर किशोरी छबिनिधि जोरी गौर श्याम सुखधाम ऐसे बेष चित चोरी खांसी झांकी

बांकी लखि लज्जित अनंग रति सबनके मन भावैं
उमाड़ि घुमाड़ि घन गरजि बरसि जल नचत मोर
बोलैं पपिहा न लेत कल त्रिविधि बयारि बहि
रही है झकोरा दै पावसको दरसावैं ॥ छिन छिन
चपला चमकि रही चारौं वोर कोकिला कलाप
करि झींगुर मचावैं सोर आलिगन थेइ थेइ नाचिकै
बतावैं भाउ मंजुआलि बलि जावैं ॥ १ ॥ रा०
गौड़गिरी मलार ॥ झमकि झुकि झूलत पिय
प्यारी ॥ सखि सावन अति सुखकारी ॥ अजब
सिंगार साजि शोभाके अगार आली लाली लहरा-
ति छहराति है छबि क्या बसन विचित्र चित चोरन
अमोल ऐसे भुषणकी उजिआरी ॥ मेघनके घटा
घोर देखि देखि नचैं मोर पवन झकोरैं जोर छाय
रहैं चारौं ओर बार बार पपिहा पुकार करै पीउ
पीउ झींगुरकी झिनकारी ॥ मधुर मृदंग संग
सारंगी सितार बाजैं राजैं बहु जंत्र स्वर सुखद

मलार गाय थेई थेई बोलि नाचि सखिन सनेह भरि मंजुअलि बलिहारी ॥ १० ॥ रा० नटमलारी ॥ सजि सिय पिय झूलन आये ॥ श्याम गौर मनहरन सुभग अति सरस सनेह सुहाये ॥ चंद्रकला सुभगादि अलीगन संग समाज बनाये ॥ मधुरअली बिलसत प्रमोद बन लखि रति मदन लजाये ॥ ११ ॥ रा० जाजमलार ॥ लाल झुँकि झूलत झोंको देत ॥ भूकषन बसन सुभग अँग सोहत सिय सुकुमारिसमेत ॥ हँसि हँसि गाय मलार मनोहर तान उपज क्या लेत ॥ युगुलचंद मुख देखि तोरि तृण मधुरअली सुख लेत ॥ १२ ॥ रा० भोपालीको मंझ ॥ बनी अति झूलनकी छबि प्यारी ॥ लाल पाग शिर सुभग लालके लाल सीस सिय सारी ॥ मंद मंद झूलत दोउ फूलत सखीं झुलावनहारी ॥ मधुरअली मुखचंद युगुल लखि प्रेम मगन बलिहारी ॥

॥ १३ ॥ रा० भोपाली ॥ रंगमैं झूलत अवध-बिहारी ॥ करि सिंगार सुभग सुषमानिधि सँग शोभित सिय प्यारी ॥ झोंका देत हरत सबको मन छबिसमूह सुखकारी ॥ मधुरअली तृण तोरि बिलोकाति प्राण निछावरि वारी ॥ १४ ॥ रा० झंझोटी ॥ सजनी झूलन आये करि सिंगार दोउ आज ॥ गौर बरन मिथिलेशकिशोरी सांवल सोइ रघुराज ॥ ऐसी छटा छिटिकि क्षितिमंडल सुखमै सहित समाज ॥ मधुरअली लखि बदन-चंद युग रतिपति मानत लाज ॥ १५ ॥ रा० झंझोटी ॥ झूलत श्यामा श्याम सरजूतीर लत-नमैं ॥ बसन झीन शोभित अरुणारे अंगन अति अभिराम भूषण जड़ित रतनमैं ॥ मंद मंद मुस-क्यात परस्पर अतिशय सिय सुकुमारि झोंका देत पतनमैं ॥ मधुरअली लखि जंत्र बजावैं गावैं राग मलार लै लै तान कतनमैं ॥ १६ ॥ रा० तिलं-

ग ॥ अवध सैयां झूलनकी ऋतु आई ॥ सर-
जूतीरे रचौ हिंडोरा सियसुकुमारि बोलाई ॥
सुनि सुख मानि लाल दशरथको हेरत मृदु मुस-
क्याई ॥ मधुरअली मुखचंद बिलोकत आनँद
उर न समाई ॥ १७ ॥ रा० भोपालीको मंझ ॥
झुलनवा झुलि रहे पिय प्यारी ॥ सरजूतीर समाज
सुहावन सखी झुलावनहारी ॥ अरस परस्पर
हँसत दोउ मिलि चितवनि भारि कटारी ॥ मधु-
रअली आनँद आलि लूटैं प्राण करत बलिहारी ॥
॥ १८ ॥ रा० देशसारंग ॥ प्यारे तुम धीरे झूलो-
हो अब डरपति सीय सुकुमारी ॥ सुघर सुजान
प्राण जीवन धन है बाड़ि बिनै हमारी ॥ तब हँसि
हेरि लाल गलबांही दै सियअलक सुधारी ॥
मधुरअली दंपतिछबि लखि लखि तोरति तृण
महि डारी ॥ १९ ॥ रा० रागबहार ॥ दोउ
सुषमानिधि झूलि रहे ॥ दशरथसुत अरु जनक

नंदिनी अरस परस गलबांह गहे ॥ उमड़ि घुमाडि घन गरजत बरसत त्रिविध समीर सुदेस बहे ॥ मधुरअली दंपतिछबि निरखति तृण तोर-ति दृगलाहु लहे ॥ २० ॥ रा० हरषन ॥ झूलैं हिँडोरे लाल लली गलबांही दिहे मुस-क्यावत हैं ॥ भूषन वसन सुरंग सुहावन अंग छटा छहरावत हैं ॥ है झांकी बांकी अति प्यारी रतिपतिहूको लजावत हैं ॥ मधुरअली आनँद अलि लूटैं तृण तोरत बलि जावत हैं ॥ २१ ॥ रा० भोपाली ॥ सांवरो झूलनको साजि जात ॥ ऐसो छैल छबीलो रसिया रंगभरे मुसक्या-त ॥ मणिनजड़ित भूषण अँग सोहत अरुण वसन फहरात ॥ मधुरअली तिनके मिलबेको लखि लखि जिय लहरात ॥ २२ ॥ रा० झंझोटी ॥ रसिया राम कुँवर बर झूलत झमाकि हिंडोर ॥ अरुण दुकूल विभूषण अँगन छबिसमूह नाहिं थोर ॥

मृदु मुसक्यावत रस बरसावत चितवनमें चित चोर ॥ भरे उमंग अनंग लजावत गावत तान मरोर ॥ सुमनसमूह चहूं कित फूले नचि नचि बोलत मोर ॥ मधुरअली गुंजत अलिपुंजन करि करि अति सुख सोर ॥ २३ ॥ रा० देशमलार ॥ झमकि झुँकि झूलत रघुबर प्यारी ॥ छबि छटा छिटिकि रहि भारी ॥ रतनरचित अति रुचिर हिँडोरा कोटिभानुउजिआरी ॥ गाय मलार झुलाय अलीगण प्राण निछावरि वारी ॥ मधुरअली मुखचंद जुगुल लखि त्रिन तोरति बलिहारी ॥ २४ ॥ रा० जाजमलार ॥ दोउ झूलि रहे रँगमाते ॥ गल बांह दिहे मुसक्याते ॥ भूषण अंग रतनमै सोहत सुरँग बसन फहराते ॥ चंद्रकलादि अलीगन गावहिँ राग मलार सुहाते ॥ मधुरअली लषि छटा छबीली रतिपतिसहित लजाते ॥ २५ ॥ रा० इमनी लावनी ॥ सखी

सिय झूलनको जाती ॥ करि सिंगार सुभग सुषमानिधि हेरत मुसक्याती ॥ छबीली क्या छबि छहराती ॥ रामकुमार नवल नायकके रहती रँगमाती ॥ अजब छबि कहै कवन भांती ॥ उमा रमा रति प्राण निछावरि करि करि हरषाती ॥ अलीगण जोहत हुलसाती ॥ मधुरअली प्यारी झूलनपर लिखति पियै पाती ॥ २६ ॥ रा० इमनी ॥ झमकि झुँकि झूलत लाल लली ॥ सरजूतीर सघन कुंजनबिच शोभा उमँगि चली ॥ सुरँगी सारी चटक भली ॥ पचरँग पाग पियाशिर शोभित गुच्छा कुसुमकली ॥ हँसनि दुहुनकी लषत अली ॥ ऐसी छबि कबि कहै कवनविधि रतिपतिमान मली ॥ तकनि प्यारीकी गजब बली ॥ मधुरअली अवधेशछयलपर जनु दुइ नली चली ॥ २७ ॥ रा० धूरिया मलार ॥ झूलत लाड़िली रघुबीर ॥ रतनरचित हिँडोरना

शुचि सुभग सरजूतीर ॥ करहिँ गान मलार अलिगन स्वर सुखद गंभीर ॥ नचहिँ थेइ थेइ मोरगाति लै मोद उमँग शरीर ॥ सभै लषि सुर सुमन बरसत जलद बरसत नीर ॥ मधुरअली समीप पंखा लिये करति समीर ॥ २८ ॥ रा० झंझोटी ॥ सजनी नीको लगै अति सावन ॥ सावन सघन कुंज सरजूतट झूलत दोउ मनभावन ॥ घन घुमंडि गरजत जल बरसत बोलत मोर सुहावन ॥ मधुरअली सिय पिय मिलि गावत रतिपतिमन ललचावन ॥ २९ ॥ रा० सूरमलार ॥ सुखसदन सिया पिय रंगभरे अलबेले बीर झमकि झूलैं ॥ अलिगण गान करैं चहुँघा छवि सो छकिकै हियमैं फूलैं ॥ मुसक्यात बतात दोऊ मिलिकै तकि तीर चलाय हिये हूलैं ॥ तृण तोरि बिलोकति मंजुअली इनकी छबिकी सम को तूलैं ॥ ३० ॥ रा० गौडगिरी ॥ नवल

दोउ झूलि झूलि मुसक्यावैं ॥ सरजूतीर तमाल कुंजमधि जीवनरस बरसावैं ॥ गाय मलार दिये गलबांही सैनकी सांग चलावैं ॥ मधुरअली दंपतिछबि लषि छकि अलिगण सुधि बिसरावैं ॥ ॥ ३१ ॥ रा० झंझोटी ॥ लली तोहिँ लाल बोलावै हो ॥ झूलाकी आज बहार रंग बरसावै हो ॥ सावन कुंज सुहावन सुख सरसावैहो महाछबि छावै हो ॥ ऐसो बांका छयल मोद उपजावै हो चितै मुसक्यावै हो ॥ झूलनकी है मौज मोहिँ मनभावै हो चले बनि आवै हो ॥ छिन छिन प्रीतम तेरी सुरति जनावै हो नहीं बिसरावै हो ॥ मधुरअली सिय सखीको कंठ लगावै हो तासु गुण गावै हो ॥ ३२ ॥ रा० नटमलारी ॥ ललन-सँग झूलति है सिय प्यारी ॥ सरसत रंग अंग अंगनमैं छबि छहरै मनहारी ॥ दै दै ताल बाल-गण गावहिँ लै लैकै सुख भारी ॥ मधुरअली

सावन कुंजनाबिच है बहार बलिहारी ॥ ३३ ॥ रा० झंझोटी ॥ सजि सावन कुंज सुहावत री दोउ राम सिया छबि छावत री ॥ कंचनमणिमै रचित हिंडोरा तापर अली झुलावत री ॥ त्रिविध समीर बहत सुख सरसत मोरवा सोर सुनावत री ॥ मधुरअली दंपति रँगराते राग मलारहिँ गावत री ॥ ३४ ॥ रा० भोपाली ॥ झुलनपर वारी है झूलत अवधविहारी ॥ सरजूतीर तमालकुंजबिच संग सिया सुकुमारि ॥ भूषन बसन सुरंग अंगमैं छूटि छटा छबि प्यारी ॥ मधुरअली जोहत मन मोहत नयनपलक नहिँ डारी ॥३५॥ रा० नटमलारी ॥ आली ललित हिँडोरवा सावन कुंज झूलत सिय पिय संग ॥ अति छबि खासी परम प्रकासी दंपति दोउ सुषमाकी रासी मणिमै भूषण अंग ॥ गज मणिमाला हृदय विशाल लसत मनौ फांसनको जाला लषि रति

लजित अनंग ॥ सखि सब गावैं हरष बढ़ावैं कोउ
दै सैनन भाउ बतावैं बाजत मधुर मृदंग ॥ दै
गलबांही अति सुखमांही तरु तमाल कुंजनकी
छांही बिहसत बरसत रंग ॥ पवन झकोरा झुंकि
घन घोरा नचत मोर बोलत चहुँओरा मधुरअली
चित चंग ॥ ३६ ॥ रा० नटमलारी ॥ आली
अवधछयल कुंजनबिच आज झूलत मन हरि
लेत ॥ माणिमय झूलन सरजूकूलन रचित अजब
छबि छटा अतूलन सिय सुकुमारिसमेत ॥
आलिगण गावैं यंत्र बजावैं सुनि सुनि पिय प्यारी
मुसक्यावहिँ सब समाज सुख देत ॥ बरसि
फुहारे झुंकि घन कारे झनन झनन झींगुर झनकारे
मधुरअली सुखहेत ॥ ३७ ॥ रा० जंगला ॥
प्यारे तेरी झूलनपर मैं वारी ॥ चितवनि तीर
चलाय हाय हँसि बसीकरन है मनहारी ॥ नासीको
मोती क्या डोलत बचन सुधासो सुखकारी ॥

मधुरअली बांकी छबि खासी कोटि मदनको मद गारी ॥ ३८ ॥ रा० झंझोटी ॥ तेरी झूलन कहर करै कैसी ॥ दशरथलाल बिहाल बाल सब ताकहिँ चित्रलिखी ऐसी ॥ फांसीसी हांसी है बांकी तिरछी तकनि तीर तैसी ॥ मधुरअली छबि कहै कवन कबि अब या हाल बनी जैसी ॥ ३९॥ रा० झंझोटी ॥ झूलनकी अजब बहार बनी ॥ करि सिंगार सिया पिय झूलन अँगन शोभा सुभग घनी ॥ मोतिनको शिर क्रीट चंद्रिका चित्र बिचित्र हीरा रचित कनी ॥ बागो लाल लाल सोइ सारी मनहारी सो सुगंध सनी ॥ मृदु मुसक्यात बतात परस्पर तिरछी चितवनि तीर अनी ॥ मधुरअली मनहरन सबनके ऐसी छबि कबि कौन भनी ॥ ४० ॥ रा० जंगला ॥ लाल तेरी झूलन मन मोहि लिया ॥ फाँसीसी हाँसी है तेरी तिरछी चितवनि जुलुम किया ॥ मंद मंद

है झोंक झुलावो डरपाति है सुकुमारि सिया ॥ मधुरअली नागर सुखसागर तुम जीवन धन अवधपिया ॥ ४१ ॥ रा० सारँग देश ॥ झमकि तुम धीरे झूलो लाल कौसलपाल कृपाल ॥ अति सुकुमारि प्राणप्रियप्यारी कहैं बचन मृदु बाल ॥ सुनि प्रिय बोल सखिनके पीतम हँसि डाऱ्यो छबिजाल ॥ मधुरअली लषि मुख सुषमानिधि मनमथ उर अति साल ॥ ४२ ॥ रा० इमनी ॥ लावनी ॥ सरजूतट झूलत लाल लिये सिय प्यारी ॥ चहुँ लता ललित झुकि रहीं अजब सुखकारी ॥ तहिंके माधि राजत रुचिर हिंडोरन भारी ॥ मणिजड़ित जगामग जोति होति उजिआरी ॥ तेहिपै दोउ दै गलबांह हँसत मनहारी ॥ लषि मधुरअली रति कामकोटि मदगारी ॥ ॥ ४३ ॥ रा० इमनी ॥ झूलत सिय अवधबिहारी ॥ करि सिंगार सुभग अँग भूषण सुरँग ब-

सनपर वारी ॥ चंद्रकलादि अलीगण गावैं मधुरे स्वर सुखकारी ॥ मधुरअलीं रतिपति लषि मोहत कहि न जात छबि भारी ॥ ४४ ॥ रा० जाजमलार ॥ दोउ झूलत दै गलबांही ॥ सरजूतीर ललित कुंजनबिच सुखद सुहावन छांहीं ॥ भरे उमंग झमकि क्या गावत लली लाल सुख- मांही ॥ मधुरअली मनहरन सबनके हैं पटतर कोउ नाहीं ॥ ४५ ॥ रा० गौड़गिरी ॥ झुँकि झमकि झुलन दोउ झूलैं ॥ सिया राम सुखधाम मनोहर इन छबि ना कोउ तूलैं ॥ दै गलबांह हँसत रसरँगमें मैन सँागसी हूलैं ॥ लषि मुखचंदै युगुल सुषमानिधि मधुरअली सुधि भूलैं ॥ ॥ ४६ ॥ रा० जंगला ॥ दोउ झमकि हिँडोरवा झूलि रहे ॥ करि सिंगार लली लालन मिलि ऐसी छबि नहिँ जात कहे ॥ मंद मंद मुसक्यात परस्पर दै झोंका गलबांह गहे ॥ मधुरअली

सुभगादि अलीगण गान करहिँ हगलाहु लई ॥ ॥ ४७ ॥ रा० देशमलार ॥ दोउ झूलत प्राण पियारे ॥ रघुनंदन मिथिलेशनंदिनी भूषण बसन सँवारे ॥ त्रिविध समीर बहत घन गरजत बूंदन परत फुहारे ॥ मधुरअली लषि छटा छबीली प्राण निछावरि डारे ॥ ४८ ॥ रा० भामिनीमलार ॥ चलु देखी झुलनकी झांकी ॥ लली लाल दोउ झूलत सँगमैं छूटि छटा छबि बांकी ॥ अलिगण पास झुलावैं गावैं लषि आनँदमें छाकी ॥ मधुरअली दंपति सम सुंदर कहै कवन कबि फाकी ॥ ४९ ॥ रा० झंझोटी ॥ दोउ झूलत रंग-भरे सजनी अवधेशलला मिथिलेशलली ॥ साजि सावन कुंज हिँडोरनमा मनभावनमा छबि छाय भली ॥ गरजैं घन घोर नचैं बहु मोर करैं पपिहा अतिसोर छली ॥ बरसैं नन्हि बूँदन मेघ भले सुख शीतल मंद समीर चली ॥ करि गान मलार

मजे स्वरसों सखि मंद झुलायकै मंजुअली ॥ ॥ ५० ॥ रा० नटमलारी ॥ सखि आजु नवल दोउ झूलैं ॥ इनकी सम ना कोउ तूलैं ॥ दशरथलाल लली सुषमानिधि अति आनँदके मूलैं ॥ मंद मंद मुसक्यात परस्पर भरे रंगमें फूलैं ॥ मधुरअली दंपतिछवि लषि छकि तन मनकी सुधि भूलैं ॥ ५१ ॥ रा० बिहारी ॥ देखु सखी मन मोहे सबके सियपिय [illegible] रे ॥ सरजूतीर तमालकुंजमें सुख सरसावें सबनवा रे ॥ पवन झकोर सोर मोरनके ऐसे मनके हरनवा रे चंद्रकला सुभगादि अली सब गाहि मुसक्याय दमनवा रे ॥गाय मलार रिझाय मजेसे नहिँ चित चहत टरनवा रे ॥ मधुरअली दंपति रँगभीने देखत सुखके भवनवा रे ॥यह अनुराग पाय यहि जगमें पुनि नहिँ होन अवनवारे ॥ ५२ ॥ रा० नटमलारी ॥ सिय पिय दोनौ झमकि झुँकि झू-

लैं ॥ झोंका देत परस्पर हँसि हँसि फहरत अरुण दुकूलैं ॥ तिरछी तकनि सांगसी हूलैं होत अलि-नउर शूलैं ॥ मधुरअली आनँदके मारे प्रेमवि-वश सुधि भूलैं ॥ ५३ ॥ रा० झंझोटी ॥ अल-बेले दोउ झुँकि झूलैं सियपिय सरजूकी कूलैं ॥ मणिमै भूषण भूषित अंगन तापर अरुण दु-कूलैं॥ हँसि हँसि झोंका देत परस्पर दै सुख सखिन अतूलैं ॥ गरजत मेघ मोर नचि बोलत मुनि बिरही सुधि भूलैं ॥ बहत समीर सुगंध सुहावन सुमन रंग बहुफूलैं ॥ मधुरअली मनहरन सुभग अति सबके जीवनमूलैं ॥ ५४ ॥ रा० भोपा-लीको मंझ ॥ अवधसैयां तेगी झूलनपर वारी ॥ मंद मंद दै झोंक झुलावो डरपाति जनककुमारी ॥ ऐसे बचन सुनत सखियनके सैनसांग हँसि मा-री ॥ मधुरअली करि कतल अलिनको रसिया छैल सिकारी ॥ ५५ ॥ रा० पीलू ॥ दोउ

झूलत झमकि हिंडोरवा हो ॥ रामकुँअर मिथिलेश-किशोरी हँसि बोलत चितचोरवा हो ॥ घन घुमंडि गरजत जल बरसत चहुँदिशि पवन झकोर-वा हो ॥ मधुरअली सुनि सो आजकी नाचि बोल-त बहु मोरवा हो ॥ ५६ ॥ रा० जाजमलार ॥ अवधपिय सियसँग झूलि रह्यो ॥ करि सिंगार मनोहर रसिया हँसि गलबांह गह्यो ॥ पान खात बतरात सुनत सखि ना सुख जात कह्यो ॥ मधुरअली दंपतिछबि देखत नैननलाहु लह्यो ॥ ॥ ५७ ॥ रा० इमनी ॥ चलु री चलु देखनको सजनी सियपिय झूलै मनभावनवा ॥ श्याम गौर गलबांह दिहे दोउ छबि सिंगार सुहावनवा ॥ झमकि झुलाय हँसत मृदु बोलत चितवन चित्त चोरावनवा ॥ अलिगण राग मलार मनोहर पंचम स्वर क्या गावनवा ॥ कोउ सखि भाउ बताय नित्त करि नयन सयन समुझावनवा ॥ मंद

मंद बरसत घन गरजत मोरवा सोर मचावनवा ॥ मधुरअली मन मोद बढ़ावन अतिपावन या सावनवा ॥ ५८ ॥ रा० झंझोटी ॥ आजु अवधसैयां झमकि झुलाऊँगी ॥ करि सिंगार जाय झूलनपर लै लालन पधराऊंगी ॥ पान खवाय रिझाय मजेसे राग मलारहिँ गाऊँगी ॥ मधुरअली लषि मुख सुषमानिधि व्याकुल दृगन जुड़ाऊंगी ॥ ॥ ५९ ॥ रा० जाजमलार ॥ हिँडोरे दोउ झूलत लाल लली ॥ करि सिंगार बसन बर भूषण क्या छबि आज भली ॥ अति मनहरन सुभग सुखदायक रतिगतिमान मली ॥ चंद्रकला सुभगादि अली बहु गावहिँ मधुरअली ॥ ६० ॥ रा० जाजमलार ॥ जुगुलछबि सखि नहिँ जात कही ॥ साजि सिंगार लसत झूलनपर हँसि गलबांह गही ॥ बीरी खात बतात परस्पर सैनकी सांग सही ॥ मधुरअली हिय लागि दरद करि ना सुधि

हाय रही ॥ ६१ ॥ रा० भामिनीमलार ॥ झूल-
रहे दोउ मनके हरनवा ॥ दामिनिसी मिथिलेश
नंदिनी रघुनंदन घनश्यामबरनवा ॥ मंद मंद
मुसक्यात परस्पर गाय तान लै अजब परनवा ॥
मधुरअली छबि कहत बनै ना मेरो मन हरि
लियो जानकीरमनवा ॥ ६२ ॥ रा० कुकुभी मलार
॥ दोउ हो आजु सजि कनकभवनमें झूलैं रतन
हिंडोरै ॥ चहुँदिशि श्यामघटा घन धावैं करि करि
सोर बारि बरसावैं बहत पवन त्यों जोरैं ॥
आसपास बहु यंत्र बजावैं रागमलार अलीगण
गावैं लषि आनन तृण तोरैं ॥ मधुरअली जीवन
पिय प्यारी तासुरूप छबिकी बलिहारी सुखसमूह
नहिँ थोरैं ॥ ६३ ॥ रा० जाजवंती मलार ॥
सावन कुंज हिंडोरना नवल दोउ सुखसों झूलि रहे
॥ दशरथलाल लली सुषमानिधि हँसि गलबांह
गहे ॥ पान खात दै सैन परस्पर रसकी बात

कहे ॥ मधुरअली लषि युगुल चंद्रमुख नैननलाहु लहे ॥ ६४ ॥ रा० भूपसाख ॥ आजु नवल दोउ झूलैं पिय प्यारी हो ॥ भूषण बसन सुभग अँग राजत शोभा अति मनहारी हो ॥ पान खात मुसक्यात मजेसे सो छबिपर हौं वारी हो ॥ मधुरअली तृण तोरि बिलोकति बार बार बलिहारी हो ॥ ६५ ॥ रा० भूपसाख ॥ लली अरु लाल मिलि झूलैं सुभग सरजूकी कूलैं ॥ हिँडोरा मणि-नभै सोहै ॥ सबनको देखि मन मोहै ॥ सखी क्या स्वर सुखद भरतीं ॥ मलारैं गानको करतीं ॥ झमा झम मेघसों बरसैं ॥ फुहारे रंगके सरसैं ॥ झिंगुर झनकारिकै खोलैं ॥ चहूँकित मोर नाचि बोलैं ॥ सुहावनि त्रिविध बयारि बही ॥ महा आनँद कबि को कही ॥ सुमन बहुरंगके फूले ॥ महक सुख देनके मूल ॥ चमर पंखा व्यजन ढोरैं ॥ मधुरआलि जोहि तृण तोरैं ॥ ६६ ॥ रा०

भोपाली ॥ झूलत लाल लली रँगभीने ॥ रतन-जड़ित भूषण अँग राजत बसन सुरंग नवीने ॥ गाय मलार नच्चत हँसि हेरत रतिपतिको मद छीने ॥ मधुरअली जोहत छबि मोहत यक टक पलकन कीने ॥ ६७ ॥ रा० सूरमलार ॥ हेरत हँसत झमकि झुकि झूलत रघुवर जनककिशोरी ॥ बतियां करत हरत सबको मन छबि सरसत नहिँ थोरी ॥ मंद झुलाय अलीगण गावैं राग मलार मचो री ॥ मधुरअली मुख शरदचंद जुग लषिकै मनहुँ चकोरी ॥ ६८ ॥ रा० गौड़गिरी ॥ झूलैं सियप्यारी लाल नवल हिँडोरना ॥ सरजूतीर सघन कुंजनबिच शोर करत बहु मोरना ॥ राग मलार अलीगण गावैं तान लेत चितचोरना ॥ मधुरअली बूंदन घन बरसत पवन चलत झक झोरना ॥ ६९ ॥ रा० सूरमलार ॥ झूलि झूलि मुसक्यात परस्पर रामकुँवर मिथिलेशाकि-

शोरी ॥ बन प्रमोदकी कुंजगलिनमें सुखसमूह सरसत चहुँओरी ॥ उमड़ि घुमड़ि गरजत जल बरसत तापर त्रिबिध बयारि झकोरी ॥ मधुरअली लषि बदनचंदयुग तृण तोरति सुधि बुधि भइ भोरी ॥ ७० ॥ रा० गौड़गिरी ॥ झूलत लली लाल रँगभीने ॥ गलबांही हँसिकै दोउ दीने ॥ भूषण जड़ित मणिनमै राजत तापर अरुण बसन तन झीने ॥ आस पास सुभगादि अलीगण पंखा व्यजन चमर कर लीने ॥ मधुरअली मुख-चंदमाधुरी कोटि मदनरतिको मद छीने ॥ ७१ ॥ रा० देश ॥ आली अलबेले नवल दोउ झूलैं ॥ सावन कुंज पुंज सुख सरसत श्रीसरजूके कूलैं ॥ मंद मंद गावत मुसक्यावत अलिन सुनत सुधि भूलैं ॥ मधुरअली दंपतिछबि छाकी देखि कमलदृग फूलैं ॥ ७२ ॥ रा० जाजम-लार ॥ सजि सावन कुंज हिंडोर सखी दोउ झू-

लन आये हो ॥ दशरथलाल लली रसमाते अरस परस बोलत मुसक्याते मनभावन मन हरन अंग अंगन छबि छाये हो ॥ आसपास लै जंत्र बजावैं राग मलार अलीगण गावैं बरसत रंग फुहार मोद कबि कहत लजाये हो ॥ मधुरअली सुषमानिधि दंपति सब बिधि रसिकनके हैं संपति तृण तोरति बलिजात देखि नैंनन फल पाये हो ॥

॥ ७३ ॥ रा० जाजमलार ॥ सियके सँग झूलत अवधसैयां ॥ गलबांही दै हँसत परस्पर तरु तमालकी सुखछैयां ॥ अलिगण गाय मलार मनोहर पंचम स्वर आनँद दैयां ॥ मधुरअली दंपतिछबि लषि छकि बारहि बार परति पैयां ॥

॥ ७४ ॥ रा० झंझोटी ॥ अलबेले लाल लली सजिकै दोउ झूलिरहे अति आनँदमांही ॥ हेरैं हँसैं हुलसैं रँगमें ये दीन्हे परस्पर क्या गलबांहीं ॥ मंजुअली भल सावन कुंज छटा छबि

छूटि रही तेहिँ पांही ॥ शोभा अपार न पावत पार कहै कबि को कहिजात सो नाहीं ॥ ७५ ॥ रा० मेघमलार ॥ अली लाल प्यारी सँग सजि- कै सिगाँर आज राजत हिंडोरे अति आनँद अपार है ॥ आस पास अलीगन गावतीं मलार मेघ बाजत मृदंग संग सारँगी सतार है ॥ मंजुअ- ली भलीभांति झूलत दंपति किशोर मोर नचि बोलैं करत पपिहा पुकार है ॥ गरजि घन बरसैं पवन झकोरैं बेस देखि छबि छटा रति लज्जित भो मार है ॥ ७६ ॥ रा० नटमलारी ॥ अवधलाल सिय झूलैं हिँडोर ॥ अलिगणे रागमलारहिँ गावहिँ ताथेइ ताथेइ तानन तोर ॥ बरसत रंग सुगंध फुहारे मंद मंद क्या पवन झकोर ॥ चात्रिक धुनि कोकिलकी कूकैं झिनकारी झींगुर करि शोर॥ सुनत ग्राज मेघनकी हरषत बहु बोलत नचिकै क्या मोर ॥ मधुरअली दंपति हँसि हेरत

रतिपतिको लीन्हो चित चोर ॥ ७७ ॥ रा० धूरियामलार ॥ झमकि झुकि झूलैं दोउ फूलैं ॥ दशरथसुत अरु जनकनंदिनी इनसम नहिँ कोउ तूलैं ॥ मृदु मुसक्याय ताकि तिरछी भौंहैं सांग सरिस हूलैं ॥ मधुरअली लषि छटा माधुरी सुधि बुधि सब भूलैं ॥ ७८ ॥ रा० गौड़गिरी ॥ झूलनकी क्या छबिछाई हो ॥ करि सिंगार सुभग सुषमानिधि जनकलली रघुराई हो ॥ चंद्रकला सुभगादि अलीगण राग मलारहिँ गाई हो ॥ मधुरअली मुखचंद युगुल लषि तृण तोरत बलिजाई हो ॥ ७९ ॥ रा० बिहारी ॥ प्यारे तुम झूला झूलो हो सावन अति मनभावन ॥ सावन कुंज पुंज रस बरसत मोरवा बोलि सुहावन ॥ मणिमै रचित हिँडोर बन्यो है क्या सुंदर छबिछावन ॥ पवन झकोर चलत चहुँदिशिते मेघवा जल बरसावन ॥ अलिगण जंत्र बजाय मजेसे

रागमलारहिँ गावन ॥ सुनत बोल हँसि रामकुँवर बर प्यारी कंठ लगावन ॥ मधुरअली दंपति-छबि खांसी लषि मन मोद बढ़ावन ॥ ८० रा० पीलू ॥ गलबांही दिहे क्या झूलि रहे पिय प्यारी हिँडोरे ॥ दोउ मिलि गावत मृदु मुसक्यावत चित-वनमें चित चोरे ॥ मंजुअली जोहति तृण तोरति नैनन कियेहैं चकोरे ॥ ८१ ॥ रा० पीलू ॥ शोभित सरजूतीरे हो झूलत लाल लली सुषमानि-धि सखियां चहुँकित हो ॥ यकतो मास सुहावन सावन पावन अति मनभावन हो पवन झकोर जोर जल बरसत मोरवा बोलत हो ॥ मणिमै झूला बन्योअतूला फूल फुले सुखमूला हो अलिगण रागमलारहिँ गावैं भाउ बतावैं हो॥मधु-रअली दंपतिछबि जोहति तृण तोरति मन मोहति हो देखि देखि क्या छटा छबीली रतिपति लज्जित हो ॥ ८२ ॥ रा० गौरीमलार ॥ नवल दोउ

झूलैं दै गलबहियां ॥ अवधलाल मिथिलेशकुमा-
री तरु तमालकी छहियां ॥ करि सिंगार सुभग
सुषमानिधि ऐसी छबि कहुँ नहियँ ॥ अलिगण
गाय मलार मजेसे मधुरअली सुखमहियँां ॥
॥ ८३ ॥ रा० नटमलारी सावन क्या सुख
सरसि रह्यो ॥ रंग फुहार बह्यो ॥ सरि सरजूके
सघन कुंजबिच शोभा न जात कह्यो ॥ हरित
भूमिपर हरित फरस है हरित समाज लह्यो ॥
मधुरअली तहँ सियपिय झूलत हँसि गलबांह
गह्यो ॥ ८४ ॥ रा० नटमलारी ॥ अवधपिय
झूलत मनको हरैं ॥ बोलत फूल झरैं ॥ राग म-
लार अलीगण चहुँदिशि सुखसों गान करैं ॥
खवात्राति सिय मुसक्यावति नयनकी सैन करैं ॥
मधुरअली लषि बदनचंद जुग ना दृग पलक
परैं ॥ ८५ ॥ रा० नटमलारि ॥ मन मोहे सब-
नके लाल लली दोउ आली क्या झूलैं ॥ मणिमे

झूलन रचित अतूलन सुंदर सरजूकूलैं ॥ अति घन छांही दै गलबांही छबि देखैं सखि फूलैं ॥ मधुरअली दंपतिरँगमाती प्रेमभरी ऐसी मुसक्याती तनकी सुधि सब भूलैं ॥ ८६ ॥ रा० नटमलारी ॥ अलबेले नवल दोउ झूलिरहे सजि आज हिँडोरैं ॥ अलिगन गावैं भाउ बतावैं हँसि हँसिकै मुख मोरैं ॥ सुनि पिय प्यारी दै कर-तारी चितवनिमें चित चोरैं ॥ मधुरअली दोऊ मनहारी रतिपति आय करत बलिहारी लषि लषि छबि तृण तोरैं ॥ ८७ ॥ रा० नटमलारी ॥ झमकि झुँकि झूलि दोउ मुसक्यावैं ॥ रतिपति तिन्हैं लजावैं ॥ दै गलबांह परस्पर गावत नैन-की सैन चलावैं ॥ आसपास सुभगादि अलीगण आनँद उमँगि झुलावैं ॥ मधुरअली मुखचंद यु-गुल लषि व्याकुल दृगन जुड़ावैं ॥ ८८ ॥ रा० इमनी भोपाली ॥ झुँकि झूलैं हिँडोरे लाल लली

॥ नीलकमलसम छबि प्यारेकी ।सियछबि सुंदर चंपकली ॥ आसपास सब सखी सलोनी गावहिँ राग मलार भली ॥ अति मनहरन युगुल जोरी-को देखि जियत नित मधुरअली ॥ ८९ ॥ रा० नटमलारी ॥ नवल दोउ झूलत हरे हरे ॥ छबि सिंगारभरे ॥ सरजूतीर हरित कुंजनबिच तरु तमालके तरे ॥ हरित वितान तन्यो ताऊपर हरित मोफरस परे ॥ तापर हरित हिँडोर मनोहर देखत मनहिँ हरे ॥ हरित पाग बागो सो हरित है भूषण मणिन हरे॥बसन बिभूषण हरित रंग क्या सियअँग भूषित करे ॥ हरति पुसाक सखिन अँग साजे मेघमलार उचरे ॥ त्रिबिध समीर बहत सुखदायक रंग फुहार झरे ॥ हरित छत्र शोभित सुषमानिधि हरित सो चमर ढरे ॥ मधुरअली लखि हरित छटा सब निज हियमाहिँ धरे ॥ ९० ॥ रा० नटमलारी ॥ बदरवा अरुण रंग छाये ॥

गरजि बारि बरसाये ॥ सांझसमै सरजूतट कुंजन लली लाल आये ॥ अरुण पुसाक अरुण मणि भूषण अंगन सुभग सुहाये ॥ चटक चाँदनी लाल लगी है लालै फरस बिछाये ॥ तापर झूला बन्यो मनोहर लालसी साज सजाये ॥ तेहिपर लसत नवल दोउ सिय पिय रतिपति लषत ल-जाये ॥ लाल बसन अलियनअँग राजत तेइ सब गाय झुलाये ॥ मधुरअली लाली छबि बां-की देखि नयनफल पाये ॥ ९१ ॥ ॥ दोहा ॥ झमकि नवल झूलत दोऊ, हेरत मृदु मुसक्यात ॥ मधुरअली लषि छबि छकति, तृण तोरति बलिजात ॥ ९२ ॥ रा० कलँगड़ा ॥ सखि मन मोहै झुल-नकी झाकी ॥ लली लाल दोउ लसत मजेसे छूटि छटा छबि बांकी ॥ नयन पयन शर मनहुँ मयनके बिहँसनि गजब मजाकी ॥ मधुरअली मनहरन रूप लषि लाज रहति नहिँ ढांकी ॥

॥ ९३ ॥ रा० सावन ॥ रसिया रामकुँवर बर है झुलनेकी बहार ॥ सावन कुंज पुंज रस बरसत रंगन परत फुहार ॥ तेहि मधि मणिमै सुभग हिँडोरा जनु बिरच्यो रति मार ॥ मधुरअली बिनती सियजूकी चलिये सुनि सुकुमार ॥ ९४ ॥ रा० भोपालीको मंझ ॥ अवधाबिहारी सिकारी कुंजन पगु धारी है ॥ झूला ललित सुखकारी अजब मनहारी है ॥ झूलति राजदुलारी सिया सुकुमारी है ॥ लषि प्यारीछबि भारी छटापर वारी है ॥ सखि आरती उतारि तोरि तृण डारी है ॥ राग मलार उचारि देत कर तारी है ॥ मधुरअली बलिहारी पलक नहि टारी है ॥ ९५ ॥ रा० कलँगड़ा ॥ क्या झुँकि झूलैं नवल दोउ आज ॥ मणिमै झूला बन्यो अतूला सुंदर सुभग दराज ॥ तापर लली लाल मिलि राजत छबिनिध धरमजहाज ॥ मधुरअली लषि चमर चलावति और न

दूसर काज ॥ ९६ ॥ रा० जाजमलार ॥ सियजू चलिये झूलन प्यारी रसिया लाल बोलावै ॥ सरजूपुलिन प्रमोद बिपिनमधि अजब छटा छबि छावै ॥ बानी सुनत आलिनकी प्यारी नहिं हिय हरष समावै ॥ मधुरअली दोउ लसत झुल-नपर रतिपति लषत लषत लजावै ॥ ९७ ॥ रा० भोपाली ॥ झमकि दोउ झूलत लाल लली ॥ मंद मंद मुसक्यात परस्पर तापर सैन चली ॥ राभ-भानुको देखि अलीगण प्रफुलित कमलकली ॥ युगुलरूप पर प्राण निछावरि कीन्हो मधुरअली ॥ ९८ ॥ रा० झंझोटी ॥ सावन सुहावन है सखी झूलन बहार है ॥ चलो चली तहँ देखिये जहँ अवधको यार है ॥ सुखपुंज कुंजनमध्यमें मौजै अपार है ॥ मणिजाडित झूला क्या बनो छबिको अगार है ॥ तिस्में झमकि झूलैं दोऊ कीन्हे सिंगार हैं ॥ चहुँवोर अलि सजि गावतीं रागैं मला

रहैं ॥ बरषैं सुमन बहु मंजुअलि देवनकी दार हैं ॥ ९९ ॥ गजल ॥ सिय लाल सुभग सिँगार करि क्या झमकि दोउ झूलैं ॥ ऐसी छटा छबि जगमगै नहिँ और कोउ तूलैं ॥ मुसक्याय सैन चलाय बांकी सांगसी हूलैं ॥ गावैं अलीगण मंजुअलि लषि रूप सुखमूलैं ॥ १०० ॥ रा० झंझोटी ॥ झमकि नवल दोउ क्या झुकि झूलैं हो ॥ अतिमन हरन सुखमूलैं हो ॥ अवधलाल मिथिलेशनंदिनी करि सिँगार सरजूकी कूलैं हो ॥ अलिगण गाय मलार मजेमे देखि युगुलछबि तनसुधि भूलैं हो ॥ मधुरअली दंपतिकी झांकी अतिबांकी जोहत दृग फूलैं हो ॥ १०१ ॥ रा० बिहाग ॥ झमकि दोउ पिय प्यारी झूलैं ॥ राग मलार अलीगण गावैं लषि छबि सुखमूलैं ॥ अति मनहरन नवल सुखसागर नहिँ दूसर तूलैं ॥ मधुरअली दृगसैन सांगसम मारि हिये हूलैं ॥

॥ १०२ ॥ रा० नटमलारी ॥ रसिया क्या दोऊ झुँकि झूलैं ॥ सुंदर सरजूकूलैं ॥ गौर श्याम सुख-सिंधु मनोहर छबि सिँगारके मूलैं ॥ गलबांही दै हँसत परस्पर नयन मनहुँ शर हूलैं ॥ मधुर-अली उर कसक अलिनके उठत छिनै छिन शूलैं ॥ १०३ ॥ रा० नटमलारी ॥ दोउ क्या झूलत झमकि झुलनवा ॥ सुंदर मास सवनवा ॥ करि सिंगार सुभग अँग भूषण सियप्यारी अरु अवधल-लनवा ॥ चंद्रकला सुभगादि अलीगण आनँदभरी उमगवा ॥ गाय मलार लिहे पंचम स्वर लै लै तान कतनवा ॥ बोलत मोर मेघ जल बरसत बहत सो मंद पवनवा ॥ मधुरअली दंपति सुषमा-निधि ऐसे मनके हरनवा ॥ १०४ ॥ रा० नट-मलारी ॥ झमकि दोउ झूलत हरे हरे ॥ सिय पिय संग भरे ॥ अति मनहरन नवल क्या रसिया सुभग सिँगार करे ॥ अलिगण गाय मलार मजेसे

रँगफुहार झरे ॥ मधुरअली लषि युगुलचंदमुख नहिं दृग पलक परे ॥ १०५ ॥ रा० इमन॥ झमकि झूलि दोउ हिलि मिलि गावत ॥ दशरथलाल लली सुषमानिधि दै गलबांह मधुर मुसक्यावत ॥ गरजत मेघ मोर नाचि बोलत कोकिल क्या प्रिय बोल सुनावत ॥ मधुरअली झांकी बरबाकी कोटि मदन रतिको सकुचावत ॥ १०६ ॥ रेखता ॥ सखी सावन सुहावन है ॥ हिँडोरेकी क्या बनावन है ॥ झमकि दोउ झूलैं पिय प्यारी ॥ दिहे गलबांह मनहारी ॥ अलीगण गानको करतीं ॥ मजेसे स्वरनको भरतीं ॥ फुहारे रंगके बरसैं ॥ मधुरआलि हिये सुख सरसैं ॥ ॥ १०७ ॥ रा० भोपाली ॥ सिय पिय आज झूलन सजि जाते ॥ सरजूतीर ललित कुंजनमधि आनँद हिय न समाते ॥ दै गलबांह बैठि झूलनपर झमकि झूलि मुसक्याते ॥ मधुरअली

झांकी लषि छाकी रतिपाति मन सकुचाते ॥ १०८ ॥ कजरी ॥ धीरे धीरेते झुलावोहो अवध प्यारे ॥ अतिसुकुमारी सिया प्यारी जू डरपति अति भूपतिके बारे ॥ सुनि मुसक्याय दिहे गलबांही ताकि तिरछी जनु शर मारे ॥ मधुरअली बांकी छटा छबीली रतिपाति देखत हिय हारे ॥ ॥ १०९ ॥ ॥ इति श्रीमधुरअलीकृतयुगलहिंडोललीला समाप्ता ॥ ॥ ॥ ॥

अथ युगलबसंतविहार लीला लिख्यते ॥

राग बहार ॥ खेलत बसंत रघुबरकिशोर ॥ मनहरन हाय चित लेत चोर ॥ सँग भरत लषन रिपुदमन बीर ॥ प्रिय नर्म सखनकी अजब भीर ॥ बरसत है परस्पर बहु अबीर ॥ पिचकारि चलत नहिँ धरत धीर ॥धधकत मृदंग डफ तबल बीन॥ सारँगि सितार तंबूर झीन ॥ मुरली मुचंग मुखड़ा उपंग ॥ करताल बीन झझकत सुसंग ॥

सुख फैलि रह्यो सब अवधगैल ॥ हिय हरष होत श्रीअवधछैल ॥ लै सुमन सुरहु चढ़िकै बिमान ॥ तिनकी बधू सोऊ करहिँ गान ॥ तृण तोरि बिलोकति मंजुअली ॥ सखि फूलि रहीं मानौ कंज कली ॥ १ ॥ रा० बहार ॥ खेलत बसंत अवधेशलाल ॥ नर नारि बिलोकत भे निहाल ॥ लै अनुज सलोने सखन संग॥छबिके समूह सब भरि उमंग ॥ उत जनकलली ल अलिन साथ ॥ सब सान भरी लिये बोर हाथ॥धधकत मृदंग बहु जंत्र चोर ॥ दोहुँवोर सोर सुख है न थोर ॥ लै तान उपज गावैं बहार ॥ सुनि चकित होत रतिसहित मार ॥ करि कूट येक यक धरहिँ धाय ॥ मुख मसलि गुलालै कहि न जाय ॥ नभते निरषि सुर बरषि फूल ॥ कहि मंजुअली शोभा अतूल ॥ २ ॥ दोहा ॥ बजत नगारे घमकिकै, होरी समर बिचारि ॥ सुनत सोर उठिकै

चली, श्रीमिथिलेशकुमारि ॥ ३ ॥ चंद्रकला सुभगादिबिच, सिय शोभति सुखकंद ॥ गईं तहां देखत भईं, रघुनंदन मुखचंद ॥ ४ ॥ लाल ललीको देखिकै, उठि हँसि कर गहिलीन ॥ होरी रँगबोरी मचै, पीतम आयसु दीन ॥ ५ ॥ अनुज सखा सब साथके, छैल छबीले खूब ॥ खेलत फाग उमंगमें, है जिनके मन हूब ॥ ६ ॥ एकओर सिय सखिन लै, होरी खेलनहेत ॥ रामकुँवर यकओर भे, भाइन सखनसमेत ॥ ७ ॥ इत सखि कहि जै जनकजा, बोलि सखा जै लाल ॥ अस कहि होरी ह्वै चली, बरसत रंग गुलाल ॥ ८ ॥ जंत्र बजावैं अलीगण, करैं मधुर-स्वर गान ॥ उपज तान षटका सुखद, चलत नयनके बान ॥ ९ ॥ पिय प्यारी दोउ रंगमें, मंद मंद मुसक्याय ॥ युगुलचंदमुख देखिकै, अलीं सबै बलिजायँ ॥ १० ॥ झिला झिली

भै दोहुँदिशि, परी अबीरन मार ॥ सूझत हाथ पसार नहिँ, भयो महा अँधियार ॥ ११ ॥ चंद्रकला तब दौरिकै, पहुँचि गोलमें जाय ॥ लखनलालको लै गई, नाहिँ कछु सखन बसाय ॥ १२ ॥ रा० इमनी भोपाली ॥ मैं चलीजात जलभरन आपनी खोरी ॥ मिलि गयो अचानक लाल करी बरजोरी ॥ हँसिकै कर पकऱ्यो मोर मसालि मुख रोरी ॥ बरजो नहिँ मान्यो नेक मैं बहुत निहोरी ॥ तेहिपै मोरी चूनर चटक रंगमें बोरी ॥ मोतिनकी माल बिशाल हियेकी टोरी ॥ मैं भवन कवनविधि जाउँ दशा यह मोरी ॥ मधुरअली घर झगरब चलिबै कोरी ॥ १३ ॥ रा० काफी ॥ होरी खेलनको आई अलिन लैकै जनककिशोरी ॥ सो सुनि उठत लाल रघुनंदन अनुज सखा सब जोरी ॥ हँसत लसत मणिमहल चलतभे प्रेम प्रमोद न थोरी ॥ लिहे

भरि अबिरन झोरी ॥ लखि मुखचंद पियाको प्यारी जंत्र बजावत दोरी ॥ सुमनछडी करकमल सबनके सखी समर सहजोरी ॥ हांकि हरिको पकरो री ॥ अब न चलत काबू काहूकी बंधु सखा मुख मोरी ॥ लै तियबेष बनाय लालको बाल बजाय हँथोरी ॥ कहैं सियके पाँय परो री ॥ तब मुसक्याय ढांपि मुख अंचल लली ताकि तृण तोरी ॥ मधुरअली पीतम तुम नागर आज भयो कस गोरी ॥ हमै आचरज बहोरी ॥ १४ ॥ रा० काफी ॥ आज परस्पर होरी मचाई ॥ दशरथसुत अरु जनकनंदिनी सागर रूप लोनाई ॥ हँसत लसत मणिमहलमध्य दोउ संग सखी समुदाई ॥ छटा छूटत अँगनाई ॥ बाजत ताल मृदंग सितारे सारंगी सुरनाई ॥ बरसत रंग सुगंध फुहारन सो सुख कहि न सिराई ॥ मनौ सावन सरसाई ॥ तोहि छिन छीनि लियो कटिसों पट

जनकललली मुसक्याई ॥ लै गुलाल मुख मसलि लालके अंजन नैन लगाई ॥ कहां गै चंचलताई॥ देखत हाल लाल रघुबरको चंद्रकला ढिग आई ॥ दै द्दग सैन सांगसी बांकी बीरी बिहँसि पवाई पकरि मुख चुंबन ल्याई ॥ या सुख कहत शेष श्रुति सकुचत कविजन पार न पाई ॥ मधुरअली अवगाह मिलै रस मनभावन सुखदाई ॥ लषि रति मदन लजाई ॥ १५ ॥ रा० काफी ॥ डाऱ्यो रंग अचाका हमारेपर रघुबर बांका ॥ अनुजन-सहित सखा सँग लीन्हे गहे गयलको नाका ॥ सानदार सहजोर सांवरो ऐसो छैल मजाका समरको बांधि पताका ॥ फिरत उमंग गजब गर-बीलो होरीके रँग छाका ॥ करकमलन कंचन-पिचकारी डारि अलिनपर डांका ॥ रहत नहिँ कैसो ताका ॥ हँसि हँसि हाथ फांसि सखियनको छल बल बीर कजाका ॥ मधुरअली निरशंक

शंक नहिँ सहिजादा यकराजाका मान मथि सीय सभाका ॥ १६ ॥ रा० झंझोटी ॥ होरी खेलन आई जनकलली साजि आज ॥ मृगनैनी कोकिलसी बैनी ऐसी सखिनसमाज ॥ मणिनजड़ित मंदिर तहँ आई जहँ रघुराज बिराज ॥ मधुरअली दंपतिछबि देखत रतिपति मानत लाज ॥ १७ ॥ रा० काफी ॥ रँगीले रंगमहलमें खेलि रहे दोउ फाग॥दशरथसुत अरु जनकनंदिनी उमँगि उमँगि अनुराग ॥ भीजिगई सियकी शिरसारी नवल लालकी पाग ॥ मधुरअली तृण तोरि त्रिलोकति सरसत सरस सोहाग ॥ १८ ॥ रा० गारा ॥ रघुनंदन प्यारे ऐसी होरी मचाई ॥ रंग गुलाल रँगी सियसारी अपनी पाग बचाई ॥ गाफिल कियो सबन सखियनको नैनके बान चलाई ॥ मधुरअली अवधेशछयलने छल बल करी है सचाई ॥ १९ ॥ रा० काफी ॥ होरी रंगमहलमें

खेलत मोदमई ॥ रामकुमार सिया सखियनयुन शोभा अजब छई ॥ जंत्र जमाय गाय रँग बरसत सरसत प्रीति नई ॥ तब मुसक्याय पकरि प्यारे-को प्यारी पान दई ॥ मसलि गुलाल कपोलन तेहि छिन पुनि मुख चूमि लई ॥ तब हँसि हेरि लाल अंचल गहि कहि कस जीति भई ॥ सुनि प्रिय बोल अमोल अली यक आतुर पास गई ॥ करि सिंगार सुभग अँग भूषण मोतिन मांग ठई मधुरअली करि नवल दुलहिया छबि बलिजाउँ जई ॥ २० ॥ रा० सारँग ॥ सजनी दोउ खेलि-रहे होरी ॥ दशरथलाल लली रँगभीने लै अबीर करमें झोरी ॥ मृदु मुसक्यावत सुख सरसा-वत नयन सयनमें चित चोरी ॥ मधुरअली मनहरन सबनके राजमहलकी खोरी ॥ २१ ॥ रा० काफी ॥ होरी रची रँगभारी आजकी अज-ब तयारी ॥ अनुज सखा सहजोर संग सब लै

करमें पिचकारी ॥ हुलसत हँसत फँसावत सखियन ऐसो अवधबिहारी ॥ छबीलो छैल सिकारी ॥ गोल कपोल बोल मनमोहन नैनन मारि कटारी ॥ घायल बाल घनी सब घूमैं सुधि बुधि देहिँ बिसारी ॥ बचीं येकौ नहिँ नारी ॥ देखि देखि अस दशा सखिनकी समुझि हारि सियप्यारी ॥ मधुरअली ललकारि अलिनको गहि पियकी पिचकारी ॥ चली नहिँ अब हुँसियारी ॥ ॥ २२ ॥ रा० सहाना ॥ सांवरे रँग डारो सँभारिकै ॥ जो मोरी सारीमें रंग परैगो तौ भिजउब तेरी पाग पकरिकै ॥ सुनि सखिबोल लाल मुसक्याने केसर पिचका भरिकै ॥ मधुरअली उरबिच तकि मान्यो राजकुँवर नहिँ नेकौ डरिकै ॥ ॥ २३ ॥ रा० गारा ॥ बिनै मोरि सुनिये सियप्यारि ॥ कर युग जोरि मनावनके हित आयो अवधबिहारी ॥ सुखकी खानि हानि सब दुखकी

निमिकुलकी उजिआरी ॥ तजि अब रोष दोष नहिँ पियको आपै बात बिचारी ॥ करि सिंगार सुभग अँग भूषण पहिरि कुसुमरँग सारी ॥ केसर रंग घोरि करकमलन लै लालनपर डारी ॥ तेरे हँसत हँसत नित प्यारो तेरो बदन निहारी॥ मधुरअली प्रिय मानत नाहीं प्राण करत बलिहारी ॥ २४ ॥ रा० इमनी भोपाली ॥ सखि ऐसो अवधाकिशोर लिहे पिचकारी ॥ रँग बोरि चलायो आय भीजिगै सारी ॥ तेहिपै हँसि तिरछी ताकि तीरसी मारी ॥ मोरे करत करेजे हाय पीर अतिभारी ॥ अब चलब कवन बिधि होइ दई मैं हारी ॥ घर सास ननँद दोउ देखि देइँगी गारी ॥ मोसे छल बल करिगयो छयल छलवारी ॥ मिलि मधुरअली सब सखनसहित दै तारी ॥ ॥ २५ ॥ रा० परज ॥ लाल मोहिँ रंगन बोरिदई ॥ आज अचानक मिल्यो डगरमें मैं जल भरन

गई ॥ छयल हँसिकै मोहिँ मोहि लई ॥ भूलि-
गयो घर जाब सखी री मैं अब बिबश भई ॥
माधुरी मूरति दृगन छई ॥ तान उपज लै गान
गजब है सुनि कुलकानि गई ॥ चितमें बात बि-
चारि लई ॥ मधुरअली लखि दृगनलाहु लै सब
सखि श्याम भई ॥ २६ ॥ रा० भैरवी ॥ राम-
कुँअर कुंजनबिच हमरी नाहक बांह गही रे ॥ ता-
पर मसलि अबीर बदनमें को अनरीत सही रे ॥
ऐसो छैल गैल जब लाग्यो निज पतिव्रत न
रही रे ॥ मधुरअली को पीर सुनै अब जासन
जाय कही रे ॥ २७ ॥ रा० देश ॥ अलबेलो रँग
बरसायो ॥ मोरी चूनर चटक भिजायो ॥ औचक
रोंकि पकरि कर मेरो तापर मृदु मुसक्यायो ॥
ऐसो छैल छबीलो रसिया सैनकी सांग चलायो
॥ मधुरअली अवधेशलाल छबि देखत मदन ल-
जायो ॥ २८ ॥ रा० देश ॥ रसिया मोरी बांह ग-

ही है ॥ हँसिकै रसबात लही है ॥ करि बहु बिनै लालसों हारी ना निजबात लही है ॥ जबते छकी छैलकी छबिसों ना कुलकानि रही है ॥ मधुरअली फागुनके रँगमें पीतम भीज सही है ॥ ॥ २९ ॥ रा० भैरवी ॥ अबिर गुलाल मसलि मुख मारे मैं अब न खेलौं ऐसी होरी ॥ मै अपनी मग चली जातती धरि बहियां झकझोरी ॥ रसबश करि मोतिनलर टोऱ्यो पुनि दृगसों दृग जोरी ॥ मधुरअली पिय नेक न मान्यो राजमहलकी खोरी ॥ ३० ॥ रा० कलँगड़ा ॥ मारी रे पिचकारी सिकारी ॥ अनुज सखा सँग जात सैलको सुंदर रामबिहारी ॥ औचक भेंट भई मारगमें भिजै दई तनसारी ॥ मधुरअली निहशंक सांवरो वर वर करि मोसों यारी ॥ ३१ ॥ रा० देश ॥ हमारेपर रंग परै ना लाल ॥ बिगरि गई मोरी सुरँग चूनरी रँगिआई है हाल ॥ सुनि हेरत

जनु सैन साँगसी करत करेजे साल ॥ मधुरअली जनु समरभूमिपर घूमति घायल वाल ॥ ३२ ॥ रा० भोपालीको मंझ ॥ औचक राजकिशोर चुनर रँग बोरी रे ॥ बन प्रमोद्की कुंजगलिनमें चितवनमें चित चोरी रे ॥ तेहिपर मसलि अबीर बद्नपर फेरि कंचुकी छोरी रे ॥ मधुरअली सह्जोर सांवरो ऐसी करी बरजोरी रे ॥ ३६ ॥ रा० कलँगड़ा ॥ छैल छलियामें न जावे ॥ पिचकारी करमें रसियाके सैनकी साग चलावै ॥ मृदु मुसक्याय बताय मोहि मन रसबश करि समुझावै॥ मधुरअली कुलकानि न रहिहै ताते जाव न भावै ॥ ३४ ॥ रा० भैरवी ॥ मैं का करौं दैया सारी रँग बोरी ॥ कहा सुनी येकौ नहिँ मानै ऐसी बरजोरी ॥ निपट निशंक लाल दशरथको चोली बँद टोरी ॥ मधुरअली सरबस रस लीन्हो लै अपनी खोरी ॥ ३५ ॥ रा० भोपाली ॥ लाल बर-

ओं मैं मोरी नाजुक बहियां मरोरी ॥ मैं अपनी मग चली जातती पाय सांकरी खोरी ॥ तेहिपर मसालि गुलाल कपोलन चोलीके बँद छोरी ॥ मधुरअली अवधेश लाडिलो ऐसी दशा करि मोरी ॥ ३६ ॥ रा० कलँगडा ॥ बरजोरी मोरी सारी भिजाई रे ॥ अबधछैल सहजोर सखी री औंचक आजु पकरि मोहिँ पाई रे ॥ तेहिपर मसालि अबीर बदनमें मृदु मुसक्याय बांकी सैन चलाई रे ॥ मधुरअली छल बल करि कढिगो काह कहौं वाकी चपलाई रे ॥ ३७ ॥ रा० भैर-वी ॥ मै कैसी करौं आली सारी रँगि डारी ॥ तेहिपर टोरि माल मोतिनके कर गहि झिझकारी ॥ अवधछैल यहि गैल गजब करि ऐसो छयलवा री॥ मधुरअली सासु ननँद मोहिँ दैहैं बहु गारी ॥ ३८ ॥ रा० झंझोटी ॥ सँवलिया रंग न-हारे चुनरी बिगरी मोरी ॥ कबकी मैं ठाढी

प्यारे अरज करतती पैया परौं तोरी ॥ सुनि सुनि हँसत पकरि कर मेरो चितवनमें चित चोरी ॥ मधुरअली कछु कहत बनै ना ऐसी करी बरजोरी ॥ ३९ ॥ रा० काफी ॥ साँवरो आजु डगरमें औंचक बांह गही ॥ तेहिपर नैनबान हँसि माऱ्यो पीर न जात सही ॥ करि बहु विनै हाय मैं हारी ना निजबात लही ॥ मधुरअली छलवारे छयलके गुन नहिँ जात कही ॥ ४० ॥ रा० झंझोटी ॥ सँवलिया तोसों न बोलौं भिजै दई सारी ॥ तेहिपर हँसत हटत नहिँ नेकौ सुनो चहतहौ गारी ॥ भले चहौ तुम जाउ लाड़िलै सुनिहै जनककुमारी ॥ मधुरअली गहि नारि बनैहै बिसरि जाइ छलवारी ॥ ४१ ॥ रा० कलँगडा ॥ पचरँग सारी बिगारिगै मोरी रे ॥ बरबस पकरि कहा नहिँ मानैं केसरके रँग बोरी रे ॥ अब कहँ भागि लाल तुम जैहौ बहुत

करी बरजोरी ॥ मधुरअली तुम छटे छली हो बने चहत हौ गोरी ॥ ४२ ॥ रा॰ भैरवी ॥ रसिया रंग न डारौ मैं तेरे पांय परौं ॥ दशरथलाल सुजान प्रानधन बिनती हियमें धरौं ॥ बिगरि जाई सारी जरतारी कौन उपाय करौं ॥ मधुरअली घर सासु ननँदको जात मै हाय डरौं ॥ ४३ ॥ रा॰ - झंझोटि ॥ दशरथको लाल सारी हमारी रँगे डारी ॥ कहा सुनी येकौ नहिँ मानत रसिया छलवारी ॥ हँसि हँसि गाल गुलाल लगावत पुनि दै करतारी ॥ मधुरअली डर सासु ननँदको लषि दैहै गारी ॥ ४४ ॥ रा॰ झंझोटी ॥ सजनी क्या आज खेलैं नवल दोउ रँग होरी ॥ रामकुमार छयल अलबेलो सोइ मिथिलेशकिशोरी ॥ पिय करकमल कँचन पिचकारि प्यारी अबीर करमें झोरि ॥ अरस परस बरसत रँग सरसत मधुरअली लषि तृण तोरी ॥ ४५ ॥ रा॰ सारँग ॥

रसिया मोरी हाय रँगी चोली ॥ अवधछयल बरजो नहिँ मानै कर गहि बीर करत बोली ॥ ऐसो ढीठ कहौं क्या ये सुन पुनि हँसिकै घूंघट खोली ॥ मधुरअली सँग अनुज सखनकी बांधे आज गजब टोली ॥ ४६ ॥ रा० ॥ झँझोटी ॥ सांवलिया यार हमारा हो पीरी पिछौरीवाला ॥ कीट मुकुट मकराकृत कुंडल उर मोतिनके माला ॥ अँग अँग भूषण सजे मनोहर नृप दशरथको लाला ॥ मधुरअली छबि छाकी छैलपर नैनन करति निहाला ॥ ४७ ॥ रा० कलँगड़ा ॥ मति मारो लला पिचकारी ॥ मैं अपनी मग चली जातती काहे भिजोयो मोरी सारी ॥ तेहिपर मसलि अबीर बदनमें धरि बहियां झिझकोरी ॥ मधुरअली घर सासु ननँदडर देखत दै है गारी ॥ ॥ ४८ ॥ रा० काफी ॥ अवधछैल लगि गैल गही हँसि बहिया मोरी ॥ कहा सुनी येकौ नहिँ

मानै मैं बहुभांति निहोरी ॥ कहि कछु बैन सैन है बांकी पुनि मसल्यो मुख रोरी ॥ करी ऐसी बरजोरी ॥ नेक न डरत करत रसवश बहु मुक्तमाल मोरी टोरी ॥ केसर रंग बोरि पिचकारी सारी सुरँग रँग बोरी ॥ सखन मिलि देत हथोरी ॥ ऐसो हाल लाल करि डार्‍यो पाय आपनी खोरी ॥ मधुरअली घर जात बनै ना आई पियाकी चोरी ॥ दई हा सांसति मोरी ॥ ४९ ॥ रा० काफी ॥ बिन बोले तुम लाल करत हमसों कस झगरो ॥ अवधछैल यहि गैल गही है छली बली बर अगरो ॥ कर गहि मसलि गुलाल बदनमें दगाकरन गुन सगरो ॥ भला अबहुँ चलि डगरो ॥ दोउँ परेकी बात आज है होत नहीं हां कगरो ॥ सारी सुरँग भिजाय हमारी फोरि सीसाको गगरो ॥ हाल या घर घर बगरो ॥ सासु ननँदको है डर भारी शोच मोहिं जिय लगरो ॥ मधुरअली होरीके रँगमें बिनै नमानत ठगरो॥सिकारी

सियबर नगरी ॥५०॥ रा० कलँगड़ा ॥अवधसैयां सारी हमारी रँगि डारी ॥ औचक अली गली कर गहिकै नहिँ मान्यो छलवारी ॥ रसकी बात कहत पुनि हँसिकै ऐसो छैल सिकारी ॥ मधुरअली घर जात बनै नहिँ सासु ननँद डर भारी ॥५१॥ रा० खम्माच ॥ अवध छैल यहि गैल लागि हाँसिकै मोरी बांह गही रे ॥ औचक भेंट भई सजनी री मैं जल भरन चही रे ॥ गाल गुलाल लगाय भाल पुनि रसकी बात कही रे ॥ केसर रंग बोरि पिच-कारी सारी भिजै यही रे ॥ नयन सयनकी सांग मारि हिय कीन्ही बिबस सही रे ॥ मधुरअली घर जात बनै ना या अब हाल लही रे ॥५२॥ रा० खम्माच ॥ अवधकिशोर मोर कर गहिकै क्या कीन्ही बरजोरी ॥ मारि नयनकी सांग हियेबिच मसलि कपोलन रोरी ॥ रसबसकी बातैं कहि हँसिकै माल मोतिनकी टोरी ॥ मधुरअली जो चहौ करौ

पिय पाय आपनी खोरि ॥ ५३ ॥ रा० झंझोटी ॥ रसिया ॥ सारी सुरँग रँग बोरि ॥ बन प्रमोदकी कुंजगलिनमें चितवनमें चित चोरि ॥ फिरत उमंग गजब गरबीलो लै अबीर कर झोरि ॥ मधुरअली होरीमिस रघुबर करत अठाउ न थोरि ॥ ५४ ॥ रा० काफी ॥ अबधछयल महबूब खूब मोहिँ रँगमें भिजाई ॥ मैं अपनी मग चली जातती सासु ननँदकी पठाई ॥ तेहि छिन मिल्यो लाल सजनी री बहियां पकरि मुसक्याई ॥ नैनकी सैन चलाई ॥ ऐसो रूप अनूप देखिकै तन मन गई बिकाई ॥ अब कैसे घर जाउँ दई री मूरति दृगन समाई ॥ महासुख कहि न सिराई ॥ ऐसो हाल हाय अब करिकै पुनि नहिं बदन देखाई ॥ मधुरअली जिय तरस दरसबिन छिन पल कछु न सुहाई ॥ बिना भेंटे रघुराई ॥ ५५ ॥ रा० काफी ॥ रसिया अवधबिहारी हमारी सारी रँगि डारी ॥ अनुज सखन सँग लसत महलमधि

हाथ लिहे पिचकारी ॥ बरसत रंग गुलाल उड़ावत हँसनि बोलनिपर वारी दृगनकी मारि कटारी ॥ सुनत सोर सिय अपने भवनते अलिनसहित पगु धारी ॥ पीतमवदनचंद सुषमानिधि लखिकै जनक-कुमारी ॥ भयो आनँद हिय भारी॥सखिन बिहाय गई मैं नाहक औचक्क ताहि निहारी ॥ मधुरअली घर सासु ननँद डर दैहैं लाखन गारी ॥ हाय या हाल हमारी ॥ ५६ ॥ रा० बहार ॥ रँगबोरी होरी खेला-ऊँगी ॥ सियपियजूको छकाऊँगी ॥ लैकर जंत्र जमाय मजेसे राग बहार गाऊँगी ॥ थेइ थेइ कहि संगीत प्रीतिसों अद्भुत नाच देखाऊँगी ॥ पान ख-वाय प्राणप्यारेको पुनि हँसि भाउ बताऊँगी ॥ गहि करकमल लालको सजनी नैनकी सैन चलाऊँगी काजर कलित दृगन दोउ दैकै गाल गुलाल लगा-ऊँगी॥करि सिंगार बनाय बीर वर सारी सुरंग ओढ़ा-ऊंगी। मधुरअली तृण तोरि देखि मुख आनँदसिंधु समाऊँगी ॥ ५७ ॥ रा० बहार ॥ मिथिलापुर होरी

माचि रही ॥ खेलत सिय पिय फागु परस्पर ऐसी छबि नहिँ जात कही ॥ उड़त गुलाल कुमकुमा केसर रंग धरामें धार बही ॥ दंपतिबदन मयंकपूर लषि मधुरअली दृगलाहु लही ॥ ५८ ॥ रा० देश॥ मिथिलामहल रँगबोरी ॥ क्या मची मजेकी होरी॥ यकवोर सखिन सिय संगमैं ॥ कर झोरी अबीर उमंगमैं ॥ सँग रामकुँवरके भाई ॥ जिनकी छबि कहि नहिँ जाई ॥ दोहुँवोरते जंत्र बजावैं ॥ करि गान मधुर मुसक्यावैं ॥ रँग धूम गुलाल मची है॥ भीजै ते कोउ न बची है ॥ तब अली युगुल उठि धाँई ॥ प्यारेको पकरि लै आई ॥ पहिराय घांघरो सारी ॥ जगमगति सो होति किनारी ॥ बेंदी दै भाल अमोली ॥ पुनि कसे मजेकी चोली ॥ यहि विधि नइ नारि बनाई ॥ लखि मधुरअली बलिजाई॥५९॥ रा० इमनी भोपाली ॥ सखि रंगमहलके बीच मची रँगहोरी ॥ तहँ लसत लली अरु लाल नवल दोउ

जोरी ॥ पीतम पिचकारी हाथ सियाकर झोरी ॥ दोउ बरसत रँग गुलाल मोद उमँगो री ॥ तेहि छिन सियकी रुख पाय सखी सब दौरी ॥ करकी पिचकारी छीनि पियै पकरो री ॥ करि बेष तियाको तुत हँसीं मुख मोरी॥नैननबिच अंजन आंजि म-सालि मुख रोरी॥ तुह्मरी छलवारी चली आज नहिँ थोरी॥ लखि मधुरअली तृण तोरि बजाय हथोरी ॥ ॥६०॥ रा० बिहाग ॥ लाल मोसे नाहक रारि ठई ॥ बिनती करति रही पैयां परति रही सारी भिजै दई ॥ काह करौं घर जात बनै ना या गति मोरि भई ॥ मधुरअली अवधेश छयलकी ना लरिकाई गई ॥६१॥ रा० काफी॥ रोकत राह हमारी आज-कैसे अवधबिहारी ॥ मैं सरजू जल भरन जातती पहिरि कुसुमरँग सारी ॥ बिगरि जाई मोरी रंग परेते ताते बिनै हमारी भले तुम छैल सिकारी ॥ सुनि सखिबोल हँसत रघुनंदन चितवनि मारि कटारी॥

बढ़ी दरद उर जुल्म जौंहरी घायल बाल बिचारी लगी घरकी डर भारी ॥ ऐसी फाग मची न बची कोउ बरसि रंग पिचकारी ॥ उड़त गुलाल लाल भये बादर मधुरअली बलिहारी ॥ देखिकै तन मन वारी ॥ ६२ ॥ रा० काफी ॥ सखी री काह करौं मैं अवधको छैल छली ॥ मैं सरजू जल भरन जातती मिलिगो बीच गली ॥ लै करकमल गुलाल मजेसे मोरे मुखमें मली ॥ मधुरअली महबूब बलीसों नहिँ कछु जोर चली ॥ ६३ ॥ रा० काफी ॥ काह करौं मोरी बीर पीर रघुबीर न जानै ॥ जात चली मै भोर भरै जल मिलिगो सरजूतीर चलावत नैनकी सानै ॥ गाल गुलाल लगाय लाल हँसि रँगसों भिजायो चीर बिनै मोरी नेक न मानै ॥ मधुरअली मोरी या गति कीन्ही धरौं कवनबिधि धीर छैल गुन कौन बखानै ॥ ६४ ॥ रा० काफी ॥ छैल छलि बांह गही मोरी हँसिकै अवध पिया ॥ गावत राग

बहार मजेसे नैनकी सैन दिया ॥ रसबश करि रँग भिजै चूनरी मनभायो सो किया ॥ मधुरअली या हाल लाल करि अपनी गैल लिया ॥ ६५ ॥ रा० भोपाली ॥ रसिया राम बिहारी हमारी सारी रँगि डारी ॥ औंचक छेकि पकरि कर मेरो चूनर चटक बिगारी ॥ पुनि तिरछी तकि मारि नयनशर बांका छैल सिकारी ॥ मधुरअली घायल करि मगमें घरकी सुरति बिसारी ॥६६॥ रा० काफी ॥ अवध-लाल रसिया हमारी सारी रँग बोरी ॥ औंचक आय गह्यो कर मेरो छैल छली बरजोरी ॥ सैन सांगसी हाय मारि उर मसलि कपोलन रोरी हँसत पुनि देत हँथोरी ॥ रसबश करि मन हर्‍यो मजेसे मोतिनकी लर टोरी ॥ ऐसो फाग मचावत गावत चोलीकी बँद छोरी बांह तेहिपै झकझोरी ॥ कहा सुनी येकौ नहिँ मान्यो मैं बहुभांति निहोरी ॥ मधुरअली घर जात बनै ना आई पियाकी चोरी दई

भै सांसति मोरी ॥ ६७ ॥ रा० बिहाग ॥ अवध-
सैयां बांका छैल छली ॥ करिसिंगार सुभग अँग
भूषण ठाढ़ो बीच गली ॥ करकमलन कंचनपिच-
कारी मनमथमान मली ॥ मधुरअली हँसिकै गुलाल
लै मोरे सुखमें मली ॥ मधुरअली हँसिकै गुलाल
लै मोरे मुखमें मली ॥ ६८ ॥ रा० गारा ॥ झमकि
होरी खेलि रहे दोउ बीर ॥ दशरथलाल लली सु-
षमानिधि पहिरि बिभूषण चीर ॥ पिचकारी करक-
मल पियाके सियकर लसत अबीर ॥ रंग गुलाल
उड़ाय मजेसे धरत नहीं कहुँ धीर ॥ मंद मंद
मुसक्याय परस्पर चलत दृगनके तीर ॥ मधुरअ-
ली करि गान मधुर स्वर संग अलिनकी भीर ॥
॥ ६९ ॥ ॥ दोहा ॥ नैननकी सैनै दई, मंद मंद
मुसक्याय ॥ मधुरअली रँगसों भिजै, नहिँ कछु
मोर बसाय ॥ ७० ॥

इति श्रीमधुरअली कृतयुगल बसंतविहारलीलासमाप्त